भागीरथी देवी: संघर्ष से सशक्तिकरण की कहानी



झारखंड के एक छोटे से गांव में जन्मी भागीरथी देवी की कहानी एक ऐसी महिला की है, जिसने बाल विवाह के दर्द और चुनौतियों को झेला, लेकिन अपने साहस, मेहनत और दृढ़ निश्चय से अपने जीवन को नया आयाम दिया। उनकी यात्रा बाल विवाह के खिलाफ एक प्रेरणादायक संदेश है।

बाल विवाह और शुरुआती कठिनाइयां

भागीरथी की शादी मात्र 13 साल की उम्र में कर दी गई थी, जब वह कक्षा 7 में पढ़ रही थीं। बचपन के सपने, जो एक आदर्श शिक्षक बनने के थे, शादी और मातृत्व की जिम्मेदारियों के बोझ तले दब गए। शादी के एक साल के भीतर ही वह माँ बन गईं, लेकिन कम उम्र में माँ बनने के कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। उनका बच्चा निमोनिया जैसी गंभीर बीमारी से जूझता रहा, और इस दौरान भागीरथी को घरेलू हिंसा का भी सामना करना पड़ा।

इन परिस्थितियों ने न केवल उनकी शिक्षा छीन ली, बल्कि उनके स्वास्थ्य को भी बुरी तरह प्रभावित किया। एनीमिया और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं ने उनकी जीवनशक्ति को कमजोर कर दिया, लेकिन उनकी भीतर की ललक और सपने अब भी कहीं जिंदा थे।

शिक्षा की ओर वापसी

भागीरथी के पिता ने उनकी पढ़ाई की ललक को पहचाना और उन्हें छोटी बहन के साथ मैट्रिक की परीक्षा देने के लिए प्रोत्साहित किया। खराब स्वास्थ्य के बावजूद उन्होंने कड़ी मेहनत की और प्रथम स्थान से परीक्षा पास की। इस सफलता ने उनके आत्मविश्वास को पुनर्जीवित कर दिया।

हालांकि, उनकी पढ़ाई की राह आसान नहीं थी। तीन साल तक संघर्ष के बाद उन्होंने इंटर की परीक्षा पास की और इसके साथ ही उप मुखिया के रूप में समाज सेवा का कार्य शुरू किया।

आत्मनिर्भरता की ओर कदम

भागीरथी ने स्वास्थ्य परियोजनाओं से जुड़कर अपने समुदाय में काम करना शुरू किया। अपने बच्चों के साथ-साथ उन्होंने स्नातक की पढ़ाई पूरी की और डी.एल.एड की डिग्री हासिल की। यह सब उन्होंने अपने सपनों को जीवित रखते हुए और अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हुए किया।

अब भागीरथी आर्थिक रूप से स्वतंत्र हैं और गैर-सरकारी संगठन बनवासी विकास आश्रम के साथ बाल विवाह मुक्त अभियान का हिस्सा हैं। वह न केवल अपने जीवन को सुधारने में सफल हुईं, बल्कि उन्होंने समाज में बदलाव लाने की जिम्मेदारी भी उठाई।

समाज के लिए प्रेरणा

आज भागीरथी अपने गांव में महिलाओं और लड़कियों के लिए एक प्रेरणा हैं। वह अपनी कहानी साझा करके बाल विवाह के खतरों और शिक्षा के महत्व पर जोर देती हैं। उन्होंने समाज से वादा किया है कि वह अपने बच्चों की शादी 18 और 21 वर्ष की आयु के बाद ही करेंगी और इस कुप्रथा को मिटाने में योगदान देंगी।

संदेश

भागीरथी देवी की कहानी उन लाखों महिलाओं के लिए उम्मीद की किरण है, जो बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं के कारण अपने सपनों को भूल चुकी हैं। उनकी यात्रा दिखाती है कि सही मार्गदर्शन, मेहनत और दृढ़ निश्चय से हर चुनौती को पार किया जा सकता है।

भागीरथी देवी का जीवन बाल विवाह के खिलाफ एक आवाज है, जो समाज को यह संदेश देती है कि बदलाव संभव है, बस किसी को पहला कदम उठाने की जरूरत है।





